कयामत के फितने और उसकी निशानियाँ (अबू दाउद)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ से रिवायत का खुलासा है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी सोबान रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- बहुत जल्दी (काफिर) लोग तुम्हारे खिलाफ जमा हो जाएंगे जैसा की खाने वाले लोग खाने के बर्तन पर जमा होते है, एक आदमी ने पूछा क्या उन दिनों हम तादाद में कम होंगे? आप ﷺ ने फरमाया नहीं बल्की उन दिनों तुम्हारी तादाद बहुत जियादा होंगी लेकिन तुम सैलाब के झाग की तरह होंगे, अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रौब व दबदबा निकाल देंगे और तुम्हारे दिलों में कमज़ोरी पैदा हो जाएंगी, एक आदमी ने पूछा ए अल्लाह के रसूल! कमज़ोरी का सब्ब क्या होगा? आप ﷺ ने फरमाया दुनिया से मुहब्बत और मौत से नफरत.

2) अबू दाउद, रावी अबू मूसा अशअरी रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- मेरी ये उम्मत, उम्मते मरहूमा है (यानी इस्पर खास तौर पर रहमत की गई है) आखिरत में इस्पर सख्त अज़ाब नहीं होगा, दुनिया में इस्का अज़ाब फितने, भुकापे और नाहक कत्ल है.

3) रावी अब्दुल्लाह बिन उमर रदी; हम रसूलुल्लाहﷺ के पास बैठे हुए थे आपﷺ ने कसरत के साथ फितनों का ज़िक्र फरमाया, यहा तक की आपﷺ ने 'अल-एहलास' फितने का भी जिक्र किया, किसी ने आपﷺ से पूछा की 'अल-एहलास' फितना क्या है? आपﷺ ने जवाब दिया वो ऐसा फितना है जिसमे लोग एक दूसरे से भागेंगे और माल व सामान छीनेंगे. उसके बाद खुशहाली का फितना होगा, उस फितने को मेरे अहले बैत घर वालों मेसे एक आदमी मेरी तरफ मन्सूब करता हुआ भडकायेंगा, वो अपने आपको मेरे खानदान की तरफ मन्सूब करेंगा लेकिन वो आदमी अमली तौर पर मुझसे नहीं होगा, इसलिये की मेरा ताल्लुक तो परहेज़गार लोगों से है, उसके बाद लोग एक ऐसे आदमी पर सहमत हो जाएंगे जो गोश्त के उस लोथडे की तरह हो जाएंगा जो पस्ली की हड्डी पर होता

है. फिर बहुत बडा फितना होगा जो इस उम्मत के किसी आदमी को नहीं छोडेंगा मगर उसे ज़बरदस्त मुसीबत में मुब्तला कर देंगे, जब कानों में आवाज़ आएंगी की फितना खत्म हो चुका है तो उसमे और अधिक इज़ाफा हो जाएंगा, लोग उस फितने में सुबह के वकत मोमिन और शाम के वकत काफिर हो जाएंगे, यहा तक की लोग दो गिरोह में बंट जाएंगे. एक गिरोह खालिस ईमान वालों का होगा जिनमे दिल की खोट नहीं होंगी, और दूसरा गिरोह स्पष्ट तौर पर मुनाफिक लोगों का होगा जिनमे ईमान नहीं होगा, जब ये सूरते हाल ज़ाहिर होंगी तो तुम उस दिन या दूसरे दिन दज्जाल का इन्तेज़ार करना.

4) रावी मिकदाद बिन अस्वद रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने तीन मरतबा फरमाया- जो आदमी फितनों में मुब्तला किया गया और उसने सबर किया वो भी बहुत ही अच्छा है.

5) रावी जी मिख्बर रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- आने वाले ज़माने में तुम रूम वालों से सुलह करोंगे जो अमन के साथ तय पाएंगी, फिर तुम उनके साथ मिलकर अपने दुश्मनों से जंग करोंगे जो तुम्हारे पीछे होंगे, तुम्हें गलबा हासिल होगा, तुम माले

गनीमत (दुश्मन से हासिल हुआ माल) जमा करोंगे और अमन में रहोंगे. उसके बाद तुम वापस आ-ओगे यहा तक की तुम बुलन्द जगह की चरागाह में पडाव डालोंगे तो ईसाईयों मेसे एक आदमी सलीब (सूली का निशान) बुलन्द करते हुए नारा लगाएंग की सलीब को गलबा हासिल हो गया है, (उसका ये नारा सुनकर) एक मुसलमान आदमी गुस्से में आकर उसकी सलीब को तोड डालेगा. उस वकत रूम के लोग अहद तोड डालेंगे और लडाई के लिए जमा हो जाएंगे, और कुछ मुसलमान अपने हथियारों की जानिब गुस्से की हालत में लपकेंगे और लडाई शुरू कर देंगे तो अल्लाह तआला उस जमात को शहादत के सम्मान से नवाज़ेगा.

6) रावी अनस रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- ए अनस इसमे कुछ शुब्हा नहीं की लोग नए शहर आबाद करेंगे, उन्मे से एक शहर का नाम बसरा होगा, जब तुम उसके पास से गुज़रो या उसमे दाखिल हो तो वहा की खारी ज़मीन से दूर रहना, इसी तरह उसकी चरागाह, उसकी खजूरें, उसके बाज़ारों और उसके शासकों के दरवाज़ों से खुद को बचाना, और उस शहर के किनारों में रहना इसलिये की उस शहर को ज़मीन में धंस जाने,

पत्थरों की बारिश होने और सख्त भूकंपों का अज़ाब नाज़िल होगा और कुछ लोग रात गुज़ारेंगे और जब वे सुबह उठेंगे तो वे बन्दरों और खिन्ज़ीरों के जैसी शक्ल वाले बन जायेगे.

7) रावी अबू सईद खुदरी रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- मेहदी मेरे घर वालों मेसे होगा जो खुली पेशानी और उँची नाक वाला होगा, ज़मीन में हर जगह जुल्म व सितम होगा मेहदी उसे अदल व इन्साफ में तब्दील करेंगा और उसकी खिलाफत ७ साल होंगी.

8) रावी अनस रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- इस दुनिया की मिसाल उस कपडे की तरह है जिसको मुकम्मल फाड दिया गया है और फटा हुआ कपडा सिर्फ एक धागे से लटक रहा है, करीब है की वो धागा भी टूट जाए और दुनिया का खात्मा हो जाए. (बैहकी)